Bareilly Wednesday
12 April 2023
BAREILLY EDITION
Price ₹ 3.50/-
Pages 12

दैनिक जागरण inext

PAGE NO : 02 BOTTOM

जानकारी यूट्यूबर, लेखक प्रवीन मोहन ने प्राचीन भारत के गौरव पर दिया व्याख्यान

मिस्र में नहीं बरेली के रामनगर में है सबसे प्राचीन पिरामिड

पत्थरों पर भ्रूण व गर्भावस्था की कलाकृतियां समृद्ध चिकित्सा शास्त्र के पुख्ता सबूत

bareilly@inext.co.in

BAREILLY (11 April): श्रीराममूर्ति स्मारक कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टेक्नोलॉजी मेडिकल साइंसेज में यू ट्यूबर, लेखक एवं शोधकर्ता प्रवीन मोहन ने प्राचीन भारत में उन्नत विज्ञान एवं इंजीनियरिंग पर गेस्ट लेक्चर दिया. उन्होंने इंजीनियरिंग और मेडिकल के छात्र-छात्राओं को प्राचीन भारत में उन्नत विज्ञान, इंजीनियरिंग और शल्य चिकित्सा की जानकारी दी. उन्होंने कहा कि प्राचीन भारत में विज्ञान बेहद उन्नत था. हमारे यहां इंजीनियरिंग और शल्य चिकित्सा का प्रयोग उस समय से होता हुआ आ रहा है, जिस समय अन्य सभ्यताओं ने ठीक से चलना भी नहीं सीखा था. प्रवीन ने अजंता एलोरा की गुफाओं, पौराणिक काल की लेथ मशीन, सूर्य मंदिर कोणार्क, मंगलनाथस्वामी मंदिर में शेर के मुंह में गेंद, गुजरात में सौ किमी से ज्यादा लंबी सुरंगों, कर्नाटक में नदी के नीचे नक्कासी, विरुपाक्ष मंदिर हम्पी जो कि रामायण काल की किष्किंधा है, स्थित 56 संगीतमय खंभों के बारे में भी बताया, जिन्हें तोड़ कर अंग्रेज वैज्ञानिकों ने समझने की कोशिश की, परंतु ये खंभे अंदर से खोखले थे. इन सब का उदाहरण देते हुए उन्होंने प्राचीन भारत में उन्नत विज्ञान में इंजीनियरिंग और शल्य चिकित्सा के बारे में समझाया. उन्होंने कंबोडिया स्थित विश्व प्रसिद्ध अंकोरवाट मंदिर का भी जिक्र किया.

● नई जानकारी से अभिभूत हुए स्टूडेंट्स.

विज्ञान था समृद्ध

देश और देश से बाहर फैले पुरातन मंदिरों में पत्थरों पर गर्भ में भ्रूण की अवस्था, बच्चे के जन्म, शल्य चिकित्सा की असंख्य कलाकृतियों का उदाहरण देकर इसे हैरानी वाला बताया. उन्होंने कहा कि चार हजार वर्ष पहले के प्रागैतिहासिक काल की बात करें तो यह आश्चर्य से कम नहीं है कि तब इन कलाकृतियों को उकेरने वालों के पास यह जानकारी कैसे थी. जिसे आज अत्याधुनिक उपकरणों के कारण ही हासिल कर पाना संभव हुआ है. तब भ्रूण की आकृति को किस तरह देखना संभव हुआ, किस तरह ऊर्जा के भंडार सूर्य सहित तारों और पृथ्वी की गति के बारे में जानकारी हासिल हुई. यह सोच कर ही आश्चर्य होता है और अपनी संस्कृति पर गर्व भी कि तब हमारा विज्ञान इतना समृद्ध था. तमाम मंदिर की स्थापत्य कला अत्याधुनिक इंजीनियरिंग का पुख्ता प्रमाण हैं और यहां बनी कलाकृतियां प्राचीन भारत में आज जैसी अत्याधुनिक शल्य चिकित्सा होने की गवाही देती हैं.

प्रश्नों के आंसर भी दिए

आयुर्वेद, चरक संहिता और सुश्रुत संहिता में भी इसका विस्तार से वर्णन उपलब्ध है. प्रयागराज स्थित नेशनल म्यूजियम में रखी हुई कलाकृतियां भी प्राचीन भारत में हमारी समृद्ध शल्य चिकित्सा को प्रमाणित करती हैं. प्रवीन ने यह भी बताया कि दुनिया में सबसे प्राचीन पिरामिड बरेली के रामनगर क्षेत्र में है न की मिस्र में. व्याख्यान के बाद छात्र-छात्राओं एवं अध्यापकों के मन में उठने वाले प्रश्नों का उत्तर दिया और विद्यार्थियों से आह्वान किया, कि वे इंजीनियरिंग के दृष्टिकोण से भी पर्यटन स्थलों का भ्रमण करें. अपनी परंपराओं को समझें. इन पर विश्वास करें और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इनका विश्लेषण करें. इससे पहले एसआरएमएस सोईटी के प्राचार्य डॉ. प्रभाकर गुप्ता, एसआरएमएस सोईटीआर के प्राचार्य डॉ. एलएस मौर्य एवं ट्रेनिंग, डेवलपमेंट व प्लेसमेंट सेल के डायरेक्टर डॉ. अनुज कुमार ने सोईटी के सांतिक प्रेक्षागृह में और मेडिकल कालेज के प्राचार्य एयर मार्शल (सेवानिवृत्त) डॉ. एमएस बुटोला ने मेडिकल कालेज के ऑडिटोरियम में पौधा देकर प्रवीन मोहन और ऋचा त्रिपाठी का स्वागत किया.